

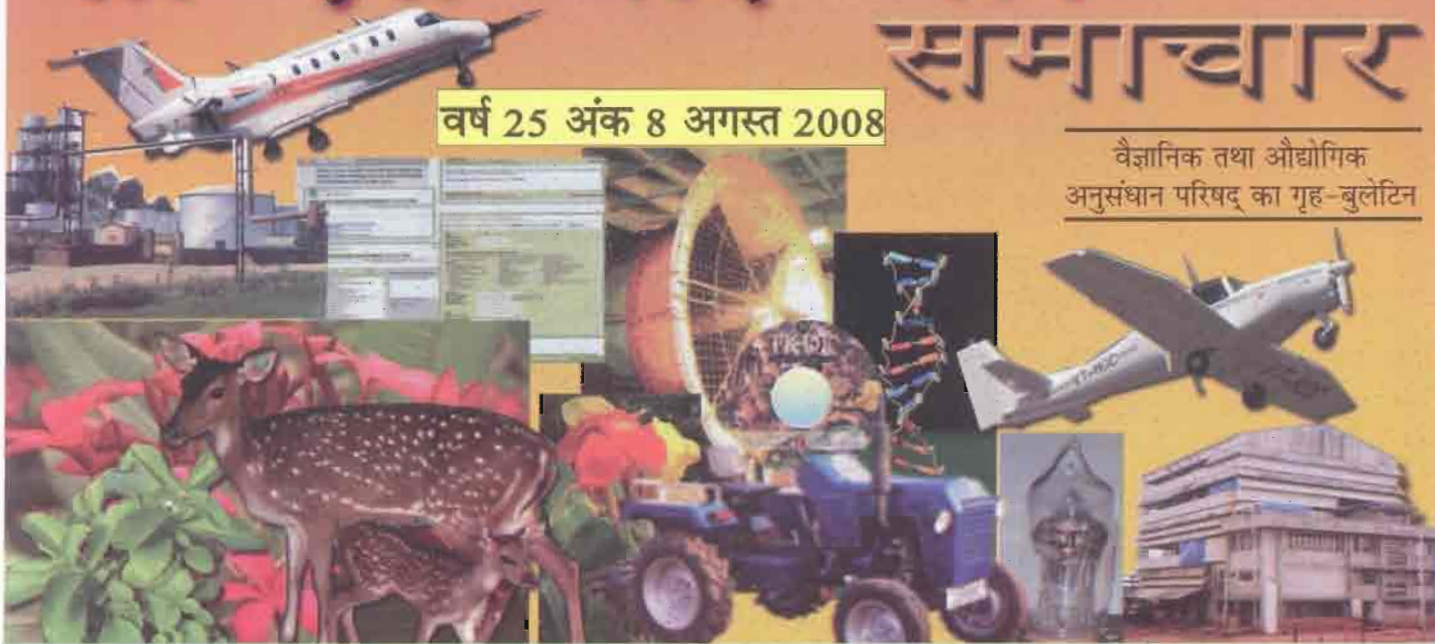
सी एस आई आर



समाचार

वर्ष 25 अंक 8 अगस्त 2008

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक
अनुसंधान परिषद् का गृह-बुलेटिन



भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने इंडिया डवलपमेंट गेटवे (InDG) पोर्टल का शुभारम्भ किया



भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने 4 जुलाई 2008 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में इंडिया डवलपमेंट गेटवे पोर्टल का शुभारम्भ किया। सी-डेक और संचार तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विकसित यह पोर्टल राष्ट्रीय स्तर की एक ऐसी शुरुआत है जो ग्रामीण तथा सामाजिक विकास के क्षेत्र में देश की विशिष्ट आवश्यकताओं को लक्षित करेगी।

भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईसीटी), हैदराबाद इस पोर्टल का एक प्रमुख भागीदार है। ग्रामीण प्रौद्योगिकियां यथा समाधान, ईएनवीएस, जिनका विकास, डॉ. यू.एस.एन. मूर्ति, प्रमुख, जीवविज्ञान विभाग, आईआईसीटी तथा उनके दल ने किया है, इस आईआईएनडीजी बहुभाषी पोर्टल के अभिन्न अंग हैं।

श्री ए. राजा, केन्द्रीय संचार तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, भारत सरकार; श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, संचार तथा सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री, भारत सरकार; प्रो. एम.एस. स्वामीनाथन, अध्यक्ष, आईएनडीजी; श्री जैंदर सिंह, सचिव, डीआईटी, भारत सरकार तथा डॉ. एस. रामाकृष्णन, महानिदेशक, सी-डेक ने विज्ञान भवन में आयोजित इस समारोह की गरिमा बढ़ाई।



सीएसआईआर/एनसीएल का गोदावरी का शुगर मिल्स लि. (जीएसएमएल), मुम्बई के साथ प्रौद्योगिकी हस्तांतरण अनुबंध

सीएसआईआर/एनसीएल एवं गोदावरी शुगर मिल्स लि. मुम्बई ने दिनांक 16 जुलाई, 2008 को गन्ने की खोई का उसके घटक बहुलकों एवं रसायनों में रासायनिक प्रभाजन करने की प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण अनुबंध पर पुणे में हस्ताक्षर किए।

इस अनुबंध से सीएसआईआर/एनसीएल एवं गोदावरी शुगर मिल्स लि. संयुक्त रूप से प्रयोगशाला में किए गए शोधकार्य तथा प्रायोगिक संयंत्र के प्रदर्शन के परिणामों पर आधारित व्यापारिक रूप से व्यवहार्य प्रौद्योगिकी विकसित कर सकते हैं। सीएसआईआर के नई सहस्राब्दि भारतीय प्रौद्योगिकी नेतृत्व पहल (नमिटली) कार्यक्रम के अधीन वर्ष 2002 में सार्वजनिक-निजी भागीदारी में शुरू की गई परियोजना में गोदावरी शुगर मिल्स लि. एक औद्योगिक भागीदार थी। गोदावरी शुगर मिल्स लि. इस प्रक्रिया को व्यापारिक स्तर पर बढ़ाने (स्केल-अप करने) तथा प्रौद्योगिकी को मान्य करने हेतु पर्याप्त निवेश करने की योजना बना रही है।

उक्त विकसित की गई प्रक्रिया में चीनी के उपोत्पाद, खोई का उसके बहुलक घटकों-सेलुलोस, हेमीसेलुलोस एवं लिग्निन में प्रभाजन हेतु नई पद्धति को अपनाया गया है। इनमें से प्रत्येक का प्रयोग कच्चे माल (प्लेटफॉर्म मैटेरियल) के रूप में औद्योगिक रूप से उपयुक्त विविध पदार्थों एवं रसायनों के उत्पाद हेतु



डॉ. शिवशम, निदेशक, एनसीएल एवं श्री समीर सोमैया, कार्यपालक निदेशक, गोदावरी शुगर मिल्स समझौता दस्तावेजों का आदान-प्रदान करते हुये

किया जाता है। ये पदार्थ पेट्रोरासायनिक स्रोतों से निर्मित कई संश्लिष्ट पदार्थों का स्थान ले सकते हैं। इस परियोजना का महत्व इस तथ्य से भी शुद्ध मूल्यवर्धित पदार्थ प्राप्त करने हेतु कच्चे माल का मौलिक स्रोत उपलब्ध करा सकती है। एनसीएल ने 100 किलोग्राम प्रतिबैच प्रदर्शन यूनिट का डिज़ाइन तैयार करके उसे गोदावरी शुगर मिल्स लि., कर्नाटक में स्थापित किया है।

सीएसआईआर का नई सहस्राब्दि भारतीय प्रौद्योगिकी नेतृत्व पहल (नमिटली) भारत में अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में सबसे बड़ी सार्वजनिक-निजी भागीदारी का कार्यक्रम है। इसके अधीन सार्वजनिक

निधि प्राप्त अनुसंधान एवं विकास संस्थाओं, शिक्षा संस्थानों एवं उद्योग जगत की उत्कृष्ट क्षमताओं को अपनाकर/सहयोगी बनाकर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत के लिए नेतृत्व निर्माण करके उसे बनाए रखने का कार्य किया जाता है। अब तक नमिटली ने विभिन्न क्षेत्रों जैसे - कृषि एवं पादप जैवप्रौद्योगिकी, सामान्य जैवप्रौद्योगिकी, जैवसूचनाविज्ञान, औषधि एवं औषधीय, रसायनों, पदार्थों, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा ऊर्जा के क्षेत्रों में 57 नेटवर्क परियोजनाएं विकसित की हैं। इन परियोजनाओं में उद्योग जगत के 80 भागीदार शामिल हैं और इसके 270 अनुसंधान एवं विकास केन्द्र हैं। इन



गोदावरी शुगर मिल्स का समीरवाड़ी स्थित प्री-फ्रैक्शनेशन संयंत्र

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) जो भारत में सार्वजनिक निधि प्राप्त सबसे बड़ा अनुसंधान नेटवर्क है, की एक अग्रणी प्रयोगशाला है।

वैज्ञानिक एवं अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) भारत का एक अग्रणी औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास संगठन है। इसकी स्थापना वर्ष 1942 में की गई थी और 1860 के सोसायटी पंजीकरण अधिनियम के अधीन पंजीकृत यह एक स्वायत्त निकाय है। सीएसआईआर का उद्देश्य है औद्योगिक प्रतिस्पर्धा में योगदान देना, सामाजिक

कल्याण, महत्वपूर्ण क्षेत्रों के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का मजबूत आधार प्रदान करना तथा मौलिक ज्ञान का उन्नयन करना। सीएसआईआर विश्व के सबसे बड़े सार्वजनिक निधि प्राप्त अनुसंधान एवं विकास संगठनों में से एक है जिसके शिक्षा संस्थानों, अनुसंधान एवं विकास संगठनों एवं उद्योगजगत के साथ सम्बन्ध हैं।

समूचे भारत में सीएसआईआर की 38 प्रयोगशालाएं हैं जो भारत के प्रत्येक नागरिक के जीवन को प्रभावित करती हैं और उसे गुणवत्ता भी प्रदान करती हैं। सीएसआईआर वायुमण्डल, जैवप्रौद्योगिकी, रसायन जैसे अनुसंधान एवं विकास के विभिन्न क्षेत्रों में और भारतीय विज्ञान के सभी क्षेत्रों में कार्यरत

है। विज्ञान के सभी क्षेत्रों में कार्यरत है।

गोदावरी शुगर मिल्स लि. (जीएसएमएल) भारत के विकास में पिछले छह दशकों से अपना योगदान प्रदान करती रही है। कर्नाटक एवं महाराष्ट्र में इस कम्पनी की दो पूर्णतः समाकलित चीनी की मिलें हैं। गोदावरी शुगर मिल्स लि. भारत की दस बड़ी चीनी मिलों में से एक है। यह कम्पनी सबसे बड़े औद्योगिक एल्कोहोल निर्माताओं में से एक है और एल्कोहोल आधारित रसायनों के निर्माण में यह अग्रणी कम्पनी है।

एनएएल को एक और विदेशी पेटेंट

एनएएल के मैटिरियल साइंस डिवीजन के वैज्ञानिक श्री ए. उदयकुमार द्वारा अविष्कृत पेटेंट आवेदन एन इम्प्रूव्ड प्रोसेस फॉर दी मैन्युफैक्चर ऑफ स्ट्रोनियम डोपेड लेन्थेनम मेनाइट (LSM) सिरैमिक पाऊडर सुटेबल फार सॉलिड ऑक्साइड फ्युल सैल एप्लीकेशन के लिए आस्ट्रेलियाई पेटेंट संख्या 2006201026 प्रदान किया गया है। इसके साथ ही एनएएल को अब तक 14 विदेशी पेटेंट प्राप्त हो चुके हैं।

श्री उदयकुमार की खोज माइक्रोवेव ऊर्जा के प्रयोग द्वारा एलएमएस पाऊडर का तीव्र संश्लेषण कम प्रोसेसिंग तापमान पर उत्पाद की शुद्धता तथा समजातीयता को बनाये रखते हुए प्रदान करती है।

परियोजनाओं में लगभग 1700 शोधकर्ता अनुसंधान कार्य में लगे हुए हैं। नमिटली ने भारत में अनुसंधान एवं विकास परियोजना की पहचान एवं प्रबन्धन के अभिनव क्षेत्र में सार्वजनिक निजी भागीदारी की एक अनुपम शुरुआत की है और भारत में अन्य निधि उपलब्ध कराने वाली एजेन्सियों हेतु स्पर्धा के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल), पुणे एक अनुसंधान, विकास एवं परामर्शी संगठन है जो प्रमुखतः रसायनविज्ञान एवं रासायनिक अभियांत्रिकी के क्षेत्र में अनुसंधान करता है। इस संगठन का उद्योग जगत के साथ अनुसंधान हेतु सफल भागीदारी का रेकॉर्ड रहा है। राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल)

महानिदेशक, सीएसआईआर ने सीएसआईओ का दौरा किया

प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) एवं सचिव, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर), भारत सरकार 15 जून, 2008 को संगठन के दौरे पर आए।

संगठन स्टाफ को दोपहर बाद अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि ऊंचे

मनोबल को रखकर ही हम उच्च विज्ञान कर सकते हैं और इसके लिए आवश्यक है निष्ठा, ईमानदारी एवं कठोर परिश्रम। उन्होंने अनुसंधान एवं विकास कार्य में नवाचार पर बल देते हुए कहा कि यदि किसी वैज्ञानिक द्वारा किए जा रहे कार्य को अन्य 4 व्यक्ति जानते हैं कि वह क्या कर रहा है तो वह विज्ञान नहीं है। अपने संबोधन में महानिदेशक महोदय ने संगठन के कई कार्यों, विशेषतः एलसीए के विकास

को सराहा तथा विभिन्न अन्य विषयों पर मार्गदर्शन किया। उन्होंने अपने संबोधन में स्टाफ को प्रेरित करने तथा प्रयोगशाला को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ पीपल एवं ईमानदार प्रयास करते रहने की बात कही। अन्त में प्रो. ब्रह्मचारी ने एक नए सीएसआईआर के निर्माण में सभी के सहयोग का आह्वान किया।

प्रो. ब्रह्मचारी ने संगठन के युवा वैज्ञानिकों से विस्तृत चर्चा की तथा उनके द्वारा किए जा रहे एवं भविष्य में किए जाने वाले कार्यों की जानकारी प्राप्त की।



महानिदेशक, सीएसआईआर संगठन स्टाफ को सम्बोधित करते हुए

उन्होंने संगठन द्वारा प्रस्तावित कई परियोजनाओं पर सिद्धान्त रूप में स्वीकृति प्रदान की।

अपने दौरे के दौरान उन्होंने संगठन की आभासी उपकरण विन्यास प्रयोगशाला, फोटोनिक्स प्रयोगशाला, आईएसटीसी भवन तथा आईटी युग की एक महत्वपूर्ण पहचान वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सुविधा का औपचारिक उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने सीएसआईओ सामुदायिक केन्द्र में हैल्थ एवं फिटनेस केन्द्र का भी उद्घाटन किया तथा वहां वे सीएसआईओ महिला क्लब के सदस्यों से भी मिले। उन्होंने संगठन स्टाफ व उनके परिवारजनों के लिए स्थापित इन सुविधाओं की प्रशंसा की।

डॉ. पवन कपूर, निदेशक सीएसआईओ ने इससे पूर्व आयोजित कार्यक्रम में महानिदेशक महोदय को सीएसआईओ के क्रियाकलापों एवं उपलब्धियों की जानकारी एक प्रस्तुतीकरण के माध्यम से दी। डॉ. कपूर ने महानिदेशक सीएसआईआर का उनके सीएसआईओ दौरे हेतु आभार प्रकट करते हुए नए सीएसआईआर के निर्माण में अपना पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।



प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर द्वारा फोटोनिक्स प्रयोगशाला के उद्घाटन का एक दृश्य



महानिदेशक, सीएसआईआर संगठन की एक प्रयोगशाला को देखते हुए

बंगालुरु बायो 2008 में सीमैप (सीएसआईआर) के वैज्ञानिक प्रतिष्ठित नवोत्पाद पुरस्कार से सम्मानित

केन्द्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान (सीमैप) के जेनेटिक रिसोर्स एण्ड बायोटेक्नोलॉजी डिविजन के वैज्ञानिकों डॉ. डी.यू. बावनकुले एवं डॉ. आशुतोष के. शुक्ला को बंगालुरु बायो-2008 में वॉकवे ऑफ डिस्कवरी पोस्टर सेशन में प्रतिष्ठित बायोटेलेट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

पिछले वर्ष भी डॉ. आशुतोष के. शुक्ला को बंगालुरु बायो-2007 के वॉकवे ऑफ डिस्कवरी पोस्टर सेशन बायो टेलेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया था और उन्हें उनके पोस्टर **EST-बेस्ड टिश्यू स्पेसिफिक ट्रांसक्रिप्टोम एनालायसिस इन कैथोरेन्थस रोजियस** के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ, जिसमें उनके साथ अजित के. शासने एवं सुमन पी.एस. खनुजा भी सम्मिलित थे।

इस वर्ष डॉ. डी.यू. बावनकुले को उनके पोस्टर **डिजाइनर फॉरमुलेशन अगेन्सट स्मेटॉइड आरथाइटिस बेस्ड ऑन साइंटिफिक वेलिडेशन एण्ड ट्रेडिशनल यूजेज ऑफ प्लांट्स** के लिये प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, जिसमें उनके साथ अनीरबान पाल, डी.एन. मैनी, डी. चन्दा, अमित श्रीवास्तव, करुणा शंकर, एम.पी. दारोकर, एन.पी. यादव, एम.एम. गुप्ता एवं सुमन

पी.एस. खनुजा सम्मिलित थे।

इस बार डॉ. आशुतोष के. शुक्ला को उनके पोस्टर **मॉलिकुलर टैगिंग ऑफ स्पेसिफिक कीमोटाइप्स ऑफ पैपेवर सोम्निफेरम यूजिंग फंक्शनल जिनोमिक अप्रोच टूवाइर्स डवलपमेंट ऑफ नॉन-नारकोटिक पॉपी**, जिसमें आशुतोष के. शुक्ला के साथ वानी बिथारे, निदर्शन चतुर्वेदी, राज के. लाल, अजित के. शासने एवं सुमन पी.एस. खनुजा सम्मिलित थे। बंगालुरु बायो जो आईटी एवं जैव प्रौद्योगिक विभाग, कर्नाटक सरकार द्वारा पोषित है तथा विजन ग्रुप ऑन बायोटेक्नोलॉजी द्वारा नियंत्रित है। भारतीय बायोटेक कम्युनिटी के एक विशाल समूह के रूप में उभर रही है और उत्कृष्ट रुचियों के क्षेत्रों को जन्म देकर विश्वभर में प्रसिद्ध हो रही है।

बंगालुरु बायो-2008, 24-26 अप्रैल 2008 को बंगालुरु में सम्पन्न हुआ। यह भारत का विशाल बायोटेक शो माना गया था तथा इसका मुख्य उद्देश्य ग्लोबल पार्टनरिंग यानी वैश्विक स्तर पर भागीदारी था। नोबेल पुरस्कार विजेता, प्रो. सिडनी ऑल्टमैन तथा मॉलिकुलर, सेल्युलर एण्ड डवलपमेंटल बायोलॉजी के उत्कृष्ट प्रोफेसर येल युनिवर्सिटी, यूएसए ने बंगालुरु बायो-2008 के उद्घाटन के अवसर पर कीनोट सम्भाषण दिया।

पिछले कई वर्षों से बंगालुरु बायो का वॉकवे ऑफ डिस्कवरी पोस्टर सेशन काफी लोकप्रिय और प्रतिष्ठापूर्ण रहा है। इसे समारोह का मुख्य आकर्षण माना जाता है, जिसमें युवा वैज्ञानिकों तथा नवप्रवर्तकों को अपना कार्य अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिखाने का अवसर मिलता है। बंगालुरु बायो-2008 में अनेक स्वीकृत आवेदनों में से समिति विशेषज्ञों ने 60 पोस्टर प्रदर्शनी के लिए चुने।

समिति के श्रेष्ठ निर्णायकों ने नवोत्पाद, समस्या का हल करने की एप्रोच रखने वाले तथा अनुसंधानों का सामाजिक-आर्थिक महत्व रखने वाले पोस्टरों का मूल्यांकन किया। इनमें से बायो टेलेंट अवार्ड के लिए पांच पोस्टर चुने गये। पांच पोस्टरों में से शीर्ष स्थान पर दो पोस्टर सीएसआईआर की अग्रणी प्रयोगशाला सीमैप, लखनऊ के थे। जो औषधि एवं सगंध पौध विज्ञान के शोध के लिए बहुचर्चित है।

बायो अवार्ड समारोह में श्रीमती वत्सला वत्स, अपर मुख्य सचिव, कर्नाटक सरकार के द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये। समारोह में आईटीबीटी तथा विज्ञान एवं तकनीकी कर्नाटक के प्रधान सचिव श्री अशोक कुमार मनोली भी उपस्थित थे।

केन्द्रीय विद्युतरसायन अनुसंधान संस्थान, कारैकुड़ी द्वारा मई-जून 2008 के दौरान प्रायोजित अनुज्ञापित प्रौद्योगिकी तथा प्रदान की गई तकनीकी सेवाएं एवं परामर्शी परियोजनाएं

1. अनुज्ञापित प्रौद्योगिकी-

रोगाणुनाशन एवं जल संसाधन प्रयोग हेतु सोडियम हाइपो क्लोराइड का स्वस्थानिक विद्युत संश्लेषण, मैसर्स पीपीएम टेक्नोलॉजीज, चेन्नै 600045

एकमुश्त प्रीमियम रु.56,180+निदर्शन मूल्य रु.28090 लाइसेंस का प्रकार तथा अवधि: अविशिष्ट एवं 7 वर्ष

शीर्षक	संगठन	मूल्य
क्यूप्रस क्लोराइड के विद्युत अपघटन एवं तांबे के पुनःप्रापण पर अध्ययन	मैसर्स ओएनजीसी लिमिटेड, पनवेल	6,23,260/-
सल्फर डाइऑक्साइड वातावरण में लेपन निष्पादन पर अध्ययन	मैसर्स इन्टरनेशनल पेंट, बंगालुरु	4,01,125/-
उपभोक्ता उपयोगार्थ संचालित बहुलक पुनः चार्ज योग्य बैटरी का निर्माण	डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नॉलॉजी, नई दिल्ली	18,04,800/-
डी. रिबोस से रीबाइटिल 3,4-जाइलिडीन के निर्माण की संभावना सम्बन्धी अध्ययन	मैसर्स चेमापॉल इण्डस्ट्रीज, मुम्बई	2,29,900/-

परामर्शी परियोजनाएं

शीर्षक	संगठन	मूल्य
बीपीसीएल पाइपलाइन हेतु ऋणाग्र रक्षक डिजाइन की समीक्षा	मैसर्स करोशज़न कन्ट्रोल इन्जीनियर्स, कारैकुड़ी	1,61,800/-
स्मार्ट क्रिएशन, चेन्नै द्वारा तांबे की वस्तुओं पर किए गए स्वर्ण विद्युतलेपन में स्वर्णांश की जांच	मैसर्स स्मार्ट क्रिएशन, चेन्नै	1,12,360

तकनीकी सेवाएं -

शीर्षक	संगठन	मूल्य
निम्नलिखित बैटरियों पर जे आईएस 8702-1	मेसर्स किलोस्कर बैटरीज़	4,11,000/-
प्राइवेट लिमिटेड, बंगालुरु विनिर्देशन के अनुसार किलोस्कर वीआरएलए बैटरी मूल्यांकन 1. 12 V/45Ah 2. 12 V/65Ah 3. 12 V/75Ah		
द्रव पेंट के नमूनों की जांच	मेसर्स सिपी पॉलीयुरेथेन प्राइवेट लिमिटेड, पुणे	56,180/-
सम्मिश्रित ऑरगेनोफॉस्फोनेट के नमूनों की जांच	एनएलसी लिमिटेड, नेइवेली	56,180/-

डॉ. रामरूप सरकार इन्सा मेडल के लिए चुने गये



डॉ. रामरूप सरकार, वैज्ञानिक, कोशिका तथा आण्विक जीवविज्ञान केन्द्र (सीसीएमबी), हैदराबाद को सैद्धान्तिक जीवविज्ञान, पारिस्थितिकी तथा महामारी विज्ञान विशेषकर निर्धारक तथा स्टॉकेस्टिक मॉडलिंग, जो कि ऐसी प्रणालियों के मॉनीटरिंग, भविष्यवाणी तथा नियंत्रण में उपयोगी है, में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रतिष्ठित भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (इन्सा) के युवा वैज्ञानिक पदक (2008) के लिए चुना गया है। इस पुरस्कार में एक ताम्र पदक, ₹.25,000 का नकद पुरस्कार तथा अन्य लाभ सम्मिलित हैं। डॉ. सरकार ने वर्ष 2004 में जवाहरपुर विश्वविद्यालय से अपनी पीएचडी पूर्ण करने के पश्चात सीसीएमबी में एक वैज्ञानिक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया तथा उनके राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय अनुसंधान पत्रिकाओं में 30 से भी अधिक अनुसंधान प्रपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। उन्हें अन्य बहुत से पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं जिनमें सीएसआईआर-डीएएडी एक्सचेंज ऑफ साइंटिस्ट फेलोशिप भी सम्मिलित है तथा वे भारत तथा विदेशों में बहुत से व्याख्यान भी दे चुके हैं।

सीमैप में विश्व पर्यावरण दिवस समारोह सम्पन्न

सीमैप में पर्यावरण दिवस का आरम्भ प्रकृति ऑरगेनिक फील्ड में एक



“प्रकृति” में पौधा रोपण समारोह



जल संरक्षण इकाई का एक दृश्य



पर्यावरण दिवस पर पोस्टर प्रदर्शनी की एक झलक

पौधा रोपण अभियान से हुआ तथा इसके बाद एक जल संरक्षण इकाई का शुभारम्भ

किया गया। यह इकाई आसुत इकाईयों से निकले जल को दक्षतापूर्वक पुनः चक्रित करेगी है। डॉ. ए पी एस खनुजा, निदेशक, सीमैप ने स्टाफ को सम्बोधित किया तथा उन्हें पर्यावरण संरक्षण तथा पर्यावरण सुरक्षा के विषय में बताया डॉ. आलोक कालरा ने सीमैप की पर्यावरण के क्षेत्र में अर्जित उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात डॉ. एस.के. चट्टोपाध्याय द्वारा **कैमिस्ट्री: टू दी रेस्क्यू ऑफ ग्रीन** विषय पर एक पर्यावरण दिवस व्याख्यान दिया गया। इससे पहले सीमैप के स्टाफ, अनुसंधानकर्ताओं तथा सीमैप स्टाफ के बच्चों के लिए एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्राप्त प्रविष्टियों की एक प्रदर्शनी लगायी गयी तथा पोस्टर प्रतियोगिता के विजेताओं को समारोह में पुरस्कार प्रदान किये गये।

प्रत्येक वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। यह उन प्रमुख माध्यमों में से एक है जिसके



सीमैप स्टाफ को सम्बोधित करते हुए निदेशक महोदय

द्वारा संयुक्त राष्ट्र विश्वभर में पर्यावरण के प्रति जागरूकता को प्रोत्साहित करता है तथा इस दिशा में राजनैतिक ध्यानाकर्षण तथा कार्यकलापों को बढ़ाता है।

वर्ष 2008 के लिए विश्व पर्यावरण दिवस का स्लोगन **किंक दी हैविट टूवर्ड्स एज लो कार्बन इकोनॉमी** है। यह मानते हुए कि जलवायु परिवर्तन हमारे युग का एक सुस्पष्ट मुद्दा बन गया है, यू एन ई पी (संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम) देशों, कम्पनियों तथा समुदायों को **ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन** तथा उन्हें कैसे कम करें पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए कह रहा है।

इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस उन संसाधनों तथा योजनाओं की ओर ध्यान आकर्षित करेगा जो न्यून कार्बन आर्थिकी तथा जीवन शैली यथा उन्नत ऊर्जा दक्षता, वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत, वन संरक्षण तथा पर्यावरण मित्र खपत को बढ़ावा देते हैं।

नीरी, नागपुर में विश्व पर्यावरण दिवस समारोह सम्पन्न

5 जून 2008 को राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (नीरी), नागपुर में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। पदम विभूषण डॉ. मोहन धारिया, जाने-माने पर्यावरणविद् तथा पूर्व उपाध्यक्ष, योजना आयोग, भारत ने इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता की। **माई अप्रोच इन इंडिया टू मीट दी चैलेन्ज ऑफ ग्लोबल वार्मिंग** पर व्याख्यान देते हुए डॉ. धारिया ने **ग्लोबल वार्मिंग** के दुष्परिणामों पर चिन्ता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि **ग्लोबल वार्मिंग** मात्र एक चुनौती नहीं है अपितु यह एक विपदा है। हमें अपने प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करते हुए **ग्लोबल वार्मिंग** के विषम प्रभावों को घटाना चाहिए, उन्होंने कहा।

डॉ. धारिया ने टिप्पणी की कि हमारे पास पर्याप्त वन, समुचित प्राकृतिक संसाधन तथा बढ़िया जल उपलब्धता होनी चाहिए ताकि **ग्लोबल वार्मिंग** हमें प्रभावित न कर सके। उन्होंने कहा कि हमें प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग बहुत सावधानीपूर्वक करना चाहिए। प्राकृतिक संसाधनों के विषय में बोलते हुए डॉ. धारिया ने कहा कि हम कुल वर्षा जल के दस प्रतिशत भाग का भी संग्रहण नहीं कर रहे हैं। जल की प्रत्येक बूंद को संरक्षित करने के लिए माइक्रो वाटरशेड डवलपमेंट तथा समुचित जल प्रबन्धन की आवश्यकता है। उन्होंने आगे कहा कि जल का संरक्षण कर बंजर अथवा बेकार भूमि को कृषि योग्य बनाया जा सकता है। डॉ. धारिया ने कहा कि ऊर्जा संसाधनों को विकेन्द्रीकृत किया जाना चाहिए तथा अपारम्परिक ऊर्जा स्रोतों पर विशेषकर सौर ऊर्जा पर विशेष जोर दिया जाना

चाहिए। ग्लोबल वार्मिंग के परिणामों पर संक्षिप्त रूप से बोलते हुए डॉ. धारिया ने कहा कि बदलती पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण अमेरिका तथा ब्रिटेन में भी अकाल पड़ने लगा है। तापमान में बढ़ोत्तरी के कारण ग्लेशियर पिघलने लगे हैं और समुद्र का स्तर बढ़ने लगा है, उन्होंने चेतावनी दी। डॉ. धारिया ने सावधान किया कि विभिन्न द्वीप, जिनमें अंडमान व निकोबार भी सम्मिलित हैं, समुद्र में डूब सकते हैं तथा भारत का 700 किमी. समुद्र का तटीय क्षेत्र **ग्लोबल वार्मिंग** के कारण प्रभावित हो सकता है।

डॉ. धारिया ने कहा कि उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के द्वारा लोगों को गन्दी शहरी झुग्गियों से हरित ग्रामों में लाना असम्भव कार्य नहीं है। अपने स्वयंसेवी संगठन **वनराई** जो कि प्राकृतिक संसाधनों के निवारण में संलग्न है, के विषय में बताते हुए डॉ. धारिया ने कहा कि वे ग्रामीण विकास तथा स्वनिर्भर ग्रामों के निर्माण में हजारों लोगों को सम्मिलित करने में सफल रहे हैं। विभिन्न ग्रामों में जिनका विकास **वनराई** द्वारा किया गया है, बहुत से ग्रामीण जो कि शहरों में प्रवास कर चुके थे, अब वापिस गांव में अच्छे जीवन-यापन के लिए आ गये हैं। डॉ. धारिया ने कहा कि प्रकृति हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति में पूर्णतः सक्षम हैं परन्तु हमें लालच से



डॉ. मोहन धारिया, विश्व पर्यावरण दिवस व्याख्यान देते हुए, मंच पर बैठे हैं (दायें से) श्री अरिन्दम घोष, डॉ. टी. चक्रवर्ती तथा डॉ. जी.वी. मुलमुले

बाहर निकलना होगा। उन्होंने जनसंख्या नियंत्रण पर भी जोर दिया।

उन्होंने इन मुद्दों पर कार्य करने के लिए युवाओं का आह्वान किया। इस अवसर पर डॉ. धारिया ने ग्रामीणों से अनुरोध किया कि मृत्यु के पश्चात शरीर को जलाने के बजाय दफनाया जाए तथा उस स्थान पर एक नीम वृक्ष लगाया जाये, ताकि भविष्य की पीढ़ी को छाया, औषधि तथा काष्ठ प्रदान किया जा सके। इससे पूर्व डॉ. टी. चक्रवर्ती, कार्यकारी निदेशक, नीरी ने स्वागत सम्बोधन दिया।

उन्होंने विश्व पर्यावरण दिवस की महत्ता तथा इस वर्ष के विषय **किक दी हेबिट** के विषय में बोला। ग्रीन हाऊस गैसों के विषय में संक्षिप्त में बोलते हुए उन्होंने **ग्लोबल वार्मिंग** में उनकी भूमिका तथा पर्यावरण पर उनके परिणामी प्रभावों के विषय में व्याख्या की।

श्री अरिन्दम घोष, वैज्ञानिक तथा प्रमुख, आर एण्ड डी प्लानिंग यूनिट, नीरी ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया तथा डॉ. जी.वी. मुलमुले, वैज्ञानिक, नीरी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक एओजीएस की बैठक में सम्मिलित हुए

हाल ही में बुसान दक्षिण कोरिया में 16-20 जून, 2008 तक आयोजित पांचवी एशिया-ओशेनिया जियोसाइसेंस सोसायटी (एओजीएस) 2008 की बैठक में एनआईओ के वैज्ञानिकों (12) के बड़े दल ने, जिसमें डॉ. प्रसन्ना कुमार, पी. वेथामोनी, पी.एम. मुरलीधरन, एम.टी. बाबू, जयु नावैकर, मंगेश गौन्स, एन. रामैया, पी.वी. शिरोडकर, के.ए. कामेश राजू, बी. नागेन्द्रनाथ, जे.एन. पट्टन और रे दरबार ने भाग लिया। एओजीएस में 7 खण्ड हैं- सॉलिड अर्थ, हाइड्रोलॉजिकल साइंस, वायुमंडलीय विज्ञान, महासागर विज्ञान, भूमंडलीय विज्ञान, अंतरनुशासनिक कार्य समूह। प्रत्येक खण्ड में 7 सत्र समाविष्ट हैं। यद्यपि एनआईओ के वैज्ञानिकों के लिए महासागर विज्ञान का सत्र प्रमुख रूप से महत्वपूर्ण था, पर अन्य सत्र भी एनआईओ के वैज्ञानिकों के लिये रुचिपूर्ण थे।

एनआईओ के वैज्ञानिकों को इसमें पहली बार निम्नलिखित सत्रों का संयोजक बनने का अवसर प्राप्त हुआ।

- ओएस14 - डिफरेंशियल रिस्पॉन्सेस ऑफ द मार्जिनल सीज (बे ऑफ बंगाल, अरेबियन सी, साऊथ चाइना सी, जावा सी) टू द एशिया मानसून एण्ड क्लाइमेट चेंज (डॉ. एस. प्रसन्ना कुमार),
- ओएस05 - कोस्टल प्रोसेस एंड पोल्युटेड ट्रांसपोर्ट इन मैक्रो - टाईडल रेजिम (डॉ. पी.वेथामोनी)
- तथा - एसई72 - रीसेंट मल्टीडिसीप्लीनरी स्टडीज ऑफ मिड-ओशन-रिजेस तथा ओफियोलाईट्स (के.ए. कामेश राजू)

सीसीएमबी वैज्ञानिकों को इन्सा व्याख्यान पुरस्कार

डॉ. अभिताम चट्टोपाध्याय, उपनिदेशक, कोशिकीय तथा आण्विक जीव विज्ञान केंद्र (सीसीएमबी), हैदराबाद को जी प्रोटीन कम्प्लेक्स रिसेप्टर के संगठन तथा कार्य में मेम्ब्रेन लिपिड की भूमिका तथा स्वास्थ्य और रोगों में इसके प्रयोग में महत्वपूर्ण योगदान के लिए भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (इन्सा), नई दिल्ली द्वारा प्रतिष्ठित विरेस चन्द्र गुहा स्मृति व्याख्यान (2008) से सम्मानित किया गया है।

इस पुरस्कार में एक प्रशस्ति-पत्र, ₹25,000 का नकद पुरस्कार तथा यात्रा खर्चा दे दी जाती है।

डॉ. चट्टोपाध्याय ने वर्ष 1989 में युव लीडर के रूप में सीसीएमबी में कार्य ग्रहण किया तथा उनके 120 से भी अधिक अनुसंधान शोधपत्र राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर के पीयर रिव्यूड अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं तथा उन्होंने पांच पुस्तकों का संपादन तथा समीक्षा भी की है। वे जैविक विज्ञान में अपने उत्कृष्ट अनुसंधान योगदान के लिए शान्तिस्वरूप भटनागर पुरस्कार, रामन रिसर्च फेलोशिप तथा खोजोर विजिटिंग फेलोशिप (इजराइल) जैसे विभिन्न पुरस्कार भी प्राप्त कर चुके हैं। वे तीन इंडियन एकेडमी ऑफ साइंस के फेलो होने के साथ-साथ बहुत से प्रतिष्ठित अन्तरराष्ट्रीय अनुसंधान पत्रिकाओं के संपादकीय मंडल के सदस्य भी हैं।

नीरी, नागपुर में डॉ. अशोक जुवारकर स्मारक व्याख्यान का आयोजन

राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (नीरी), नागपुर में 14 जुलाई 2008 को डॉ. अशोक जुवारकर स्मारक व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. डी.के. पाल, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, मृदा संसाधन अध्ययन विभाग, नेशनल ब्यूरो ऑफ सॉइल सर्वे एण्ड लैण्ड यूज प्लानिंग, नागपुर मुख्य अतिथि थे।

अपने भाषण में, डॉ. पाल ने बताया कि एनबीएसएस एवं एलयूपी ने प्राकृतिक रूप से निम्नीकृत हो गई मिट्टी के सुधार के लिए नये शोध करने की पहल की है जो जीवनक्षम प्रौद्योगिक समाधान के रूप में उभर रही प्रतीत हो रही है। डॉ. पाल ने कहा कि जलवायु में परिवर्तन होने से मिट्टी का निम्नीकरण हो जाता है और मिट्टी की उत्पादकता भी घट जाती है। साथ ही उन्होंने कहा कि शुष्क व अर्ध-शुष्क पर्यावरण में 50 प्रतिशत से भी अधिक भारत के समूचे भौगोलिक, विदर्भ क्षेत्र सहित, में मिट्टी का निम्नीकरण जलवायु परिवर्तन के कारण होता है।

डॉ. पाल ने प्राकृतिक रूप से मिट्टी के निम्नीकरण प्रक्रिया के कुछ उदाहरण दिये जो हमारे देश के कई भागों जैसे पंजाब तथा हरियाणा में टेक्टोनिक और जलवायु परिवर्तनों के कारण हो रहे हैं। अपने नये शोध की पहल के बारे में डॉ. पाल ने कहा कि पेडोजेनिक कार्बोनेट एवं मिट्टी परिवर्द्धक जैसे कि कैल्सियम जियोलाइट एवं जिप्सम का निम्नीकृत भूमि में अनुप्रयोग करने से किसानों को प्राकृतिक रूप से निम्नीकृत मिट्टी को सुधारने में राहत मिलेगी। उन्होंने विदर्भ क्षेत्र की मिट्टी, जहां खेती, मिट्टी के निम्नीकरण के कारण प्रायः प्रभावित हो रही है, पर अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि ऐसी स्थिति में यह अनूठी खोज कृषि को नया जीवन दान देने में सहायक सिद्ध होगी।

डॉ. पाल ने बताया कि राजस्थान में बहुतायत में पाया जाने वाला जिप्सम निम्नीकृत मृदा के उद्धार के लिये किसानों को उपलब्ध कराया जाना चाहिए, इससे निश्चित रूप से कृषि उत्पादकता भी बढ़ेगी।

डॉ. पाल के व्याख्यान से पूर्व, डॉ. अपूर्वा गुप्ता, कार्यकारी निदेशक, नीरी ने स्वागत सम्बोधन दिया। श्री अरिंदम घोष, वैज्ञानिक एवं प्रमुख, आर एवं डी प्लानिंगयूनिट ने मुख्य अतिथि, डॉ. पाल का परिचय कराया। डॉ. जी.वी. मुलमुले ने अन्त में धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान द्वारा ली गई नई परियोजनायें

जनवरी-मार्च 2008 की अवधि में केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान (सीएलआरआई), चेन्नै ने निम्नलिखित नई परियोजनाएं आरम्भ की।

परामर्शदात्री परियोजनाएं

1. मैसर्स द मेटल पाऊडर कम्पनी लिमिटेड, चेन्नै के लिए, विशेष एल्युमिनियम पाऊडर प्लांट की विशेषता के लिए रिस्क ऍनालिसिस तथा MCAC अध्ययन (परियोजना प्रमुख, श्री जी. स्वामीनाथन)
2. मैसर्स आईएमसी लिमिटेड, चेन्नै के लिए रसायन भंडारण के लिए, रिस्क ऍनालिसिस तथा HAZOP अध्ययन (परियोजना प्रमुख, श्री जी. स्वामीनाथन)
3. मैसर्स ग्लोबल एनविरो टेक., चेन्नै के लिए, रिस्क ऍनालिसिस अध्ययन (परियोजना प्रमुख, श्री जी. स्वामीनाथन)
4. मैसर्स भारतीय ट्रेड प्रमोशन ऑरगनाइजेशन, चेन्नै के लिए, भारतीय अन्तरराष्ट्रीय चर्म मेला IILF 2008 का मूल्यांकन (परियोजना प्रमुख, श्री डी. चन्द्रामौली)
5. मैसर्स पक्कर लेदर एक्सपोर्ट कम्पनी, चेन्नै के लिए, टैनेरी मॉडर्नाइजेशन, (परियोजना प्रमुख, श्री सी. मुरलीधरन)

अनुदान देने वाली परियोजनाएं

1. जैवप्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली के लिए, चर्म शोधन बहिःस्राव का उपचार तथा प्राइमरी एवं सेकेंडरी उपचार क्रियाओं से उत्पन्न गाद के समुद्री स्रोतों से सरफेक्टेंट उत्पादन पर प्रस्ताव (परियोजना प्रमुख, श्री ए. गनानामानी)
2. वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं रसायन विभाग, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे के लिए, स्टडीज ऑन हाइड्रेशन एण्ड लीजेंड इंटरएक्शन ऑफ बायोमालीक्युल्स ए मॉलीकुलर टेलरिंग एप्रोच
3. वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के लिए, जैविक क्रिया तथा विषक्तता का निर्धारण: एन इन-सिलिको इनवेस्टीगेशन बेस्ड ऑन द कम्बाइन क्वांटम मॅकेनिक्स एण्ड मॉलीक्युलर डायनामिक्स स्टडी (परियोजना प्रमुख, श्री वी. सुब्रमण्यम)
4. पेट्रोलियम कंजर्वेशन रिसर्च एसोसिएशन (पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय) भारत सरकार, नई दिल्ली के लिए, लो फ्लोट टैनिंग डिवाइस (CLaRI) का मॉडल तथा चर्म संसाधन उद्योग के लिए ऊर्जा संरक्षण ऑप्शन (परियोजना प्रमुख, श्री एन.के. चन्द्रबाबू एवं श्री डी. लक्ष्मणन)
5. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के लिए क्रॉस-लिंक कनेक्टिव टिश्यू के प्रयोग द्वारा कॉरनियल स्टोमल सबस्टीट्यूट का जैविक निर्माण (परियोजना प्रमुख, श्री टी.पी. शास्त्री)

6. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के लिए गैस पृथक्करण के लिए नैनोमेम्ब्रेन के संश्लेषण हेतु नयी अप्रोच - पॉलीयुरेथेन तथा ईमाइड पर आधारित ऑरगेनोसेलॉक्सेन में संरचना गुणों का संबंध (परियोजना प्रमुख, डॉ. बी.आर. रेड्डी)

सहयोगी परियोजनाएं

1. मैसर्स विनरॉक इंटरनेशनल इंडिया, गुडगांव, हरियाणा के लिए, तमिलनाडु के लिए पशुधन खाद्य अंतर्ग्रहण, दुग्ध उत्पादन का सर्वेक्षण तथा इस स्रोत से CH_4 का EF आकलन (परियोजना प्रमुख, डॉ. महादेसस्वरस्वामी)

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/ अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों यथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में हिन्दी भाषा में ही संपादक, सीएसआईआर, समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक, सीएसआईआर समाचार

ईमेल: deeksha@niscair.res.in

डॉ. आहूजा ने निदेशक, सीमैप का अतिरिक्त कार्यभार संभाला



इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन बायोरिसोर्स टेक्नोलॉजी, पालमपुर के वर्तमान निदेशक डॉ. परमवीर सिंह आहूजा ने सीमैप के निदेशक पद से डॉ. सुमनप्रीत सिंह खनुजा की स्वैच्छिक

सेवानिवृत्ति के साथ ही 1 जुलाई 2008 पूर्वान्ह से सीमैप के निदेशक का अतिरिक्त कार्यभार संभाल लिया है। इसके पूर्व प्रातःकाल डॉ. खनुजा और डॉ. आहूजा ने उमंग वृक्ष के रूप में चम्पा के पौधे का रोपण किया। डॉ. आहूजा ने इससे पूर्व सीमैप में प्लांट टिशू कल्चर लैबोरेटरी स्थापित करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। उन्होंने औषधीय और संगंध पौधे के संरक्षण व पौध सुधार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया है। सीमैप में कार्य करते हुए उनके दल ने सिट्रोनेला जावा की पहली सोमोक्लोनल किस्म सीमैप बायो-13 विकसित की है जो आज बहुतायत में उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्रों और असम में उगाई जा रही है। डॉ. आहूजा ने डॉ. खनुजा के द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कार्यों की प्रशंसा की और कहा कि वे सभी प्रयास किये जायेंगे जिसके द्वारा सीमैप प्रगति की और अधिक ऊंचाईयों को छू सके। इंस्टीट्यूट ऑफ बायोरिसोर्स टेक्नोलॉजी के निदेशक के रूप में डॉ. आहूजा ने स्टीविया, जिंगो और लेवेन्डर जैसी महत्वपूर्ण औषधीय एवं संगंध फसलों की खेती को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ. आहूजा के इस योगदान से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अतिरिक्त अवसर भी सृजित हुए हैं।

डॉ. एस. चन्द्रशेखर को आन्ध्र प्रदेश वैज्ञानिक पुरस्कार दिया गया

डॉ. चन्द्रशेखर, वैज्ञानिक, भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईसीटी), हैदराबाद को रसायन विज्ञान के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट अनुसंधान तथा सफल उपलब्धियों के लिए प्रतिष्ठित आन्ध्र प्रदेश वैज्ञानिक पुरस्कार के लिए चुना गया है। यह पुरस्कार आन्ध्र प्रदेश राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा प्रदान किया गया है



तथा इस पुरस्कार में 25,000 रु. तथा एक प्रशास्ति-पत्र दिया जाता है।

डॉ. चन्द्रशेखर ने कार्बनिक विश्लेषण के क्षेत्र में मौलिक तथा उत्पादक सहयोग दिया है। इनमें बहुत से जैवसक्रिय प्राकृतिक पदार्थों का विविध स्केफोल्ड के सही स्टीरियोकैमिकल अभिविन्यास के साथ सम्पूर्ण विश्लेषण सम्मिलित है। हरित रसायन के क्षेत्र में कार्बनिक तथा कार्बनधात्विक प्रतिक्रियाओं के लिए पॉलीइथाइलिन ग्लाइकोल के आगमन ने नवीन रास्ते खोल दिये हैं। उनके सहयोगात्मक अनुसंधान करने के उत्साह के कारण फ्रांस, जर्मनी, कोरिया, चीन, स्विटजरलैण्ड तथा अमेरिका के अनुसंधानकर्ताओं के साथ बहुत सी बौद्धिक रूप से चुनौतीपूर्ण परियोजनाओं का आरम्भ हो चुका है। कार्बनिक विश्लेषण में स्वचलन का प्रारम्भ एक नवीन चुनौती है जिस पर उन्होंने अभी हाल ही में कार्य करना आरम्भ कर दिया है। मीसोप्रोस्टोल (अल्सररोधी), कार्बोप्रोस्ट (ऑक्सीटोसिक), फॉन्डापेरिनॉक्स (कफरोधी) तथा टैक्सोल (कैंसररोधी) जैसी औषधियों के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य प्रक्रियाओं में उनके योगदान ने उन्हें उद्योग/प्रसंस्करण रसायन विज्ञान के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित अनुसंधानकर्ता बना दिया है। डॉ. चन्द्रशेखर के 100 से भी अधिक अनुसंधान प्रपत्र अन्तरराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर की अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने चार पेटेण्ट फाइल किये हैं तथा 12 से भी ज्यादा विद्यार्थियों का डाक्टरेट डिग्री के लिए मार्गदर्शन किया है।

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), डॉ. कें.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए एस.के. रस्तोगी द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निस्केयर प्रेस द्वारा मुद्रित।

संपादक: दीक्षा बिष्ट; अनुवाद: मीनाक्षी गौड़; डिजाइन एवं ले आऊट: मलखान सिंह; कम्पोजिंग: कृष्णा

फोन: 25848702, 25846301, 2584303, 25842990, 25846304-7/361 ग्राम: PUBLIFORM, New Delhi; फैक्स: 25847062

ई-मेल: deeksha@niscair.res.in वेबसाइट: http://www.niscair.res.in पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर सम्पर्क करें